

शहीद शैब रजब अली, ज़िला आजमगढ़ का क्रांतिकारी[चर्चा तथा गाथा pdf]

हिन्दुस्तान में शायद ही कोई ऐसा दिल रहा होगा जिसे गुलामी का अंधेरा राम आया हो। वैसे तो प्रत्येक हिन्दुस्तानी दिल में, चाहे वह शैख का हो या ब्राह्मण का, पठान का हो या राजपूत का, हिन्द का हो या मुसलमान का सभी दिलों में आज़ादी की शर्म रौशन थीं। देश प्रेमी दिलों में आज़ादी की रौशन ज्योति की तपिश ने गुलामी की मोटी-मोटी बेड़ियों को पिघला कर रख दिया। इस तरह भारत देश ने गुलामी की लागत से छुटकारा पाकर आज़ादी की नेमत को हासिल किया। इस लेख में महान क्रांतिकारी शैब रजब अली के भारत माता से मोहब्बत के बारे में चर्चा करेंगे।

महान एवं नामी-ग्रामी स्वतंत्रता सेनानियों के संबंध में तो लोग कुछ न कुछ जानते ही हैं, लेकिन वतन के गुमनाम शहीदों के कारनामे तो दूर की बात है, उनके नामों से भी कोई परिचित नहीं है। इस बड़ी कमी को मद्देनजर रखते हुए एक गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी शैख रजब अली शहीद का यहां उल्लेख किया जा रहा है

इनका जन्म शहीद, ज़िला आजमगढ़, मुहम्मदाबाद तहसील, ग्राम बहौर के निवासी थे। देश के इतने अन्दरूनी गांवों में भी ऐसे कई जियाले सपूतों ने जन्म लिया, जिनमें देश को आज़ाद कराने की जागरूकता मौजूद थी। यहां उर्दू की यह मिसाल सही साबित होती है कि-"खूने-नाहक़ राएगां नहीं जाता" (अनुचित हत्या बेकार नहीं जाती)।

जब फ़िरंगियों ने भारत देश पर नाजायज़ क़ब्ज़ा करके आज़ादी के इन्क़िलाबियों पर जुल्म व सितम ढाए, उन्हें जेलों में बंद किया, उन पर गोलियां बरसाई गई, यहां तक कि उन मासूमों का बेतहाशा खून बहाया गया, उन बे-गुनाहों के बहे हुए खून के कारण पूरे देश में ऐसा माहौल बना, कि केवल शहरों में ही नहीं बल्कि दूर दराज़ के क़स्बे-क़स्बे, गांव-गांव और बस्ती-बस्ती में हज़ारों लाखों आज़ादी के मतवाले पैदा हो गए। शैख रजब अली भी भारत देश के एक छोटे से गांव के गुमनाम शहीदे वतन थे, जिन्होंने भारत देश की आज़ादी की 1857 की लड़ाई में अपनी वीरता के कारनामे दिखाए। उनके साथी शैख मुब्बन, शेख बचई और ठाकुर परगन सिंह ने आस-पास के कई गांवों में घूम-घूम कर इन्क़िलाबियों को जमा किया। उनके दिलों में आज़ादी की ज्योति को रोशन किया और लोगों को देश की आज़ादी पर मर मिटने के लिए तैयार किया। इसका नतीजा यह हुआ कि उन सभी सरफ़रोशों ने अपने अपने क्षेत्र में क्रांति के आन्दोलनों में भाग लेकर अंग्रेज़ों में हड़कंप मचा दी।

फ़िरंगी यह समझने लगे कि ज़िला आजमगढ़ में भी उन्हें दमन चक्र की नीति लागू करनी पड़ेगी। योजना के तहत अंग्रेज़ों ने विद्रोहियों पर बल का प्रयोग शुरू कर दिया। शैख रजब अली के बहुत

से साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय की गिरफ्तारियों के कारण शेख रजब अली चिन्ता में पड़ गए। हालांकि वह पहले से ही समझते थे कि ताकतवर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का नतीजा तो यह होना ही था। रजब अली ने अपने अन्य साथियों की हिम्मत बंधाई। उन्होंने अगला कदम उठाने के लिए आपस में सोच-विचार किया। कुछ समय बाद स्वतंत्रता सेनानी रजब अली ने अपने साथियों शैख मुब्बन, शैख बचई, चमरू, इज़्ज़त आदि के साथ आजमगढ़ की कोतवाली पर ज़ोरदार हमला कर दिया। उन्होंने हवालात का ताला तोड़ कर उसमें बंद विद्रोहियों को रिहा कराने का बड़ा कारनामा अंजाम दे डाला।

शैव रजब अली का 18 57 की क्रांति में योगदान :-

अंग्रेज़ शासन के लिए यह एक बड़ी चुनौती थी। ब्रिटिश अधिकारियों के गुस्से का पारा सीमाओं को पार कर गया। इस दौरान रजब अली अंग्रेज़ों के पंजों से बच कर अगली रणनीति बनाने के लिए ममरूवापुर गांव में खामोशी से जाकर छुप गए। उधर ब्रिटिश सेना के अधिकारियों ने क्रांतिकारी नेता शैख रजब अली को शीघ्र ही गिरफ्तार किए जाने के हुक्म जारी कर दिए। चारों ओर युद्ध स्तर पर तलाश शुरू हो गई। गांव का कोई भी घर या टपरा ऐसा नहीं बचा, जिसकी अंग्रेज़ सिपाहियों ने तलाशी न ली हो। रजब अली कहीं भी नज़र नहीं आए। जैसे-जैसे समय गुज़र रहा था, ब्रिटिश अधिकारियों के गोरे चेहरे कभी गुस्से में लाल होते और कभी उनके माथों पर लकीरों की संख्या बढ़ती जाती थी। परेशान सैनिक अधिकारियों ने आस-पास के सभी इलाकों में सी.आई.डी. का जाल बिछा दिया।

पूरे क्षेत्र में खौफ और परेशानी का माहौल बन गया। वह गांव वाले भी जो कि शैख रजब अली का पता नहीं जानते थे, परेशान थे। जो जानते थे वह भी हैरान थे, कि देखो अब क्या होता है। देश प्रेमी गांव वाले यह नहीं चाहते थे कि आज़ादी का नेता फिरंगियों की पकड़ में आए। शैख रजब अली की तलाश में ब्रिटिश सेना के घोड़ों की टापों ने पूरे गावों की धरती को रौंद डाला। आज़ादी के मतवाले रजब अली साधनों की कमी के कारण कहीं दूर नहीं जा सके। कुछ समय बाद सी.आई.डी. ने उनके छुपने का पता लगा कर अधिकारियों को सूचना दे दी। फिर क्या था, अंग्रेज़ मजिस्ट्रेट बेनुबुल्स ने पूरी तैयारी से अपने सैनिक अमले के साथ ममरूवापुर गांव पर चढ़ाई कर दी। सैनिकों ने चारों ओर से गांव को पूरी तरह से घेर लिया।

शैख रजब अली को यह मालूम हो गया कि वह चारों जानिब से अंग्रेज़ सेना के घेरे में आ चुका है। उसने तो अपने मन में ठान रखी थी कि अपने देश के लिए ही जीना है और देश के लिए ही मरना है। भारत के उस वीर सपूत ने कुछ देर सोचा फिर अपना मन पक्का करके अपनी तलवार उठाई। वह जियाला, फिरंगियों से डरे बग़ैर ब्रिटिश सेना के घेरे में अकेले ही कूद पड़ा। भारत का

वह वीर सपूत अपनी तलवार तेज़ी से घुमाता अंग्रेज़ सैनिकों के घेरे को चीरता और तोड़ता बाहर निकल गया। सैनिक उस अकेले रजब अली की बहादुरी देख आश्चर्य चकित रह गये। सैनिकों ने उसका पीछा किया। रजब अली आगे-आगे स्वयं को बचाता और फिरंगियों को थकाता रहा। जब उसको यह अन्दाज़ा हो गया कि अब वह सेना की पकड़ में आ सकता है तो उसने वहां बह रही टोंस नदी में बिना झिझके लम्बी छलांग लगा दी। ब्रिटिश सैनिक उस बहादुर रजब अली के करतब देख कर हैरान थे। सैनिकों ने उसे नदी में कूदता देख नदी की चारों ओर से घेरा बंदी कर ली। वह क्रांति वीर कुछ समय तक तो नदी में तैरता रहा। उसने मैका पाकर नदी से बाहर निकल कर भागने की कोशिश की।

उस समय वहां ताक में बैठे एक फिरंगी सैनिक की गोली का वह शिकार हो गया। स्वतंत्रता सेनानी शैख रजब अली की लाश हाजीपुर घाट पर तड़पने लगी। क्रूर एवं मगरूर अंग्रेज़ों के बदले की आग इस पर भी ठंडी नहीं पड़ी। उन्होंने उस शहीदे वतन की लाश को चारों ओर से घेर लिया। जालिमों ने उस शहीद के बदन को जगह-जगह से संगीनों से छेद कर ज़ख्मी कर डाला। उसका सर काट कर बदन से अलग कर दिया। एक शहीद की लाश के साथ अंग्रेज़ों का अमानवीय बरताव उनके जुल्म व सितम और दरिन्दगी व वहशीपन की निशानी है। उनके बदले की आग इस पर भी नहीं रुकी, बल्कि उन्होंने शहीद रजब अली के गांव का घर जला कर राख कर दिया। उनकी बक्रिया जायदाद ज़ब्त कर ली गई।

शहीद शैख रजब अली की लाश को देश प्रेम के जर्म में कायर फिरंगियों द्वारा बेदर्दी से कितनी सज़ाए दी गई उन्हें लिखने में क्लम थरौता है। गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिवीर शैख रजब अली शहीद की याद को ताज़ा करके प्रत्येक दिल देश प्रेम से भर जाता है।